IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'' टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का अध्ययन।''

"A Study of Anxieties among Girls of the T.S.P. Area."

डॉ. बलिदान जैन
सह. आचार्य (षिक्षा)
लोकमान्य तिलक षिक्षण प्रषिक्षण
महाविद्यालय डबोक (उदयपुर)

Abstract

Adolescence is a critical stage of development, during which emotional and psychological challenges often emerge, especially among girls living in socio-economically disadvantaged regions. The Tribal Sub-Plan (T.S.P.) areas are characterized by unique cultural, educational, and economic conditions that may influence the mental health of adolescent girls. In this context, the present study aims to examine the nature and level of anxieties experienced by girls belonging to the T.S.P. areas.

The study focuses on identifying various forms of anxieties, such as academic, social, familial, and personal anxieties, and understanding the factors contributing to these concerns. Special attention is given to the impact of limited educational resources, social expectations, and environmental constraints on the psychological well-being of girls in tribal regions.

The findings of this research are expected to provide meaningful insights for educators, parents, policymakers, and social workers to develop appropriate educational and psychological support systems. The study highlights the importance of targeted interventions and awareness programs to reduce anxiety and promote the emotional well-being and overall development of girls in T.S.P. areas.

'1.1 प्रस्तावना :–

भारतीय संविधान की धारा 46 में उल्लेखित नीति निर्देशक सिद्धान्तों के कमजोर वर्गों के उत्थान का विशेष दायित्व राज्यों पर डाला गया है। संविधान में जनजाति क्षेत्रों में विकास का विशेष प्रावधान है। इन सांविधानिक दायित्वों की पूर्ति के लिए भारत सरकार द्वारा जनजाति के क्षेत्र के विकास सम्बन्धी अन्तरों को समाप्त करने के उद्देश्य से राज्यों को विशेष अनुदान दिए गए। विशेष अनुदान देने के पीछे आशय यह था कि अतिरिक्त राशि का आवंटन कर इन क्षेत्रों में विकास की गति को अन्य क्षेत्रों की तुलना में तीव्र करके आर्थिक समृद्धि लाई जा सकेगी, जिससे जनजाति क्षेत्र का पिछड़ापन कम होगा। कालक्रम में राज्यों में यह धारणा बनने लगी कि जनजाति क्षेत्र के विकास का उत्तरदायित्व केवल केन्द्र सरकार का ही

है। किन्तु जनजाति क्षेत्र में सामुदायिक विकास के माध्यम से जो आर्थिक विकास प्रारम्भ किए गए, उनमें भारत सरकार ने विकास के लिए आवंटन किए जाने वाली राशि में कोई बढ़ोतरी नहीं की। पंचवर्षीय योजनाओं में जनजाति विकास ब्लाकों को गठन किया गया, जहाँ पर 66 प्रतिशत भाग जनजाति जनसंख्या का था।

गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार राज्य सरकार द्वारा जनजाति बाहुल्य क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की योजनाओं के निर्माण, समन्वय, निर्देशन व उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सन् 1975 में जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग की स्थापना की गई। 8 अक्टूबर, 1975 द्वारा आयुक्त, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग का एक अलग पद सृजित किया गया तथा अगस्त, 1976 के आदेश द्वारा आयुक्त के कर्तव्य एवं अधिकारों का निर्धारण किया गया। जनजाति विकास कार्यक्रमों को तीव्र गति प्रदान करने के लिए अप्रेल, 1978 में विभाग का मुख्यालय जयपुर से उदयपुर (जनजाति क्षेत्र के मध्य) स्थानान्तरित कर दिया गया।

राज्य के जनजाति विकास के विभिन्न कार्यक्रमों का क्रियान्वयन जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग अपने कार्यक्षेत्र में आने वाले सम्बन्धित विभागों के माध्यम से कर रहा है। विभाग के कार्यक्षेत्र में जनजाति बाहुल्य के निम्नलिखित तीन क्षेत्र सम्मिलित है :–

1. जनजाति उपयोजना क्षेत्र।
2. परिवर्तित क्षेत्र विकास उपागम (माड़ा)।
3. सहरिया आदिम जाति क्षेत्र।

जनजाति विकास कार्यक्रमों के त्वरित क्रियान्वयन हेतु आयुक्त, जनजाति विकास को कृषि, वन, शिक्षा एवं सहकारिता विभागों के विभागाध्यक्षों के अधिकार दिए गए है तथा उपयोजना क्षेत्र के जिलाधीशों सहित विकास से सम्बन्धित सभी क्षेत्रीय व जिला स्तरीय अधिकारियों के कार्यों को निर्देशित व नियन्त्रित करने का अधिकार दिया गया है।

जनजाति उपयोजना क्षेत्र :–

जनजाति उपयोजना में योजना आयोग द्वारा बाँसवाड़ा व डूँगरपुर की सम्पूर्ण तहसीलें, उदयपुर जिले की सात तहसीलें और प्रतापगढ़ जिले को सम्मिलित किया गया था। परन्तु पांचवी पंचवर्षीय योजना के पुनः संशोधित योजना में जनवरी, 1976 (1974–79) को भारत सरकार ने उदयपुर जिले की गोगुन्दा तहसील, जिसका क्षेत्रफल 871.4 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या 83,175 थी, जिसमें आदिवासी जनसंख्या का केवल 37.23 प्रतिशत ही था, जो कि उपयोजना क्षेत्र के मापदण्ड 50 प्रतिशत से कम होने के कारण जनजाति उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित करने से मना कर दिया। परन्तु भारत सरकार इस बात से सहमत थी कि

कोई भी अन्य तहसील जिसकी 50 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी हो तथा जनजाति क्षेत्र से जुड़ा हुआ हो, उसे उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित किया जा सकता है। सिरोही जिले की आबुरोड़ तहसील, जिसकी आदिवासी जनसंख्या 66.33 प्रतिशत थी एवं यह तहसील जनजाति उपयोजना क्षेत्र की सीमाओं से जुड़ा हुआ था। एक अन्य उदयपुर जिले की गिर्वा तहसील को भी उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित किया गया। इसकी आदिवासी जनसंख्या 47.61 प्रतिशत थी एवं जनजाति उपयोजना क्षेत्र की सीमाओं से मिलता हुआ क्षेत्र था।

चूंकि इन दोनों को पहले उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित नहीं किया गया था, इसलिए इनके लिए अलग से सूक्ष्म परियोजना तैयार कर इनको जनजाति उपयोजना क्षेत्र में सम्मिलित किया गया।

आज शिक्षकों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अधिगम प्रक्रिया सदैव और सर्वत्र चलती रहती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अत्यन्त संवेदनशील क्षेत्र में हुए शोध कार्यों ने शिक्षकों को एक नवीन दृष्टि प्रदान की है। इसी क्रम में छात्र अधिगम को प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण पक्ष अधिगम शैली को जानने तथा उसे शिक्षण प्रक्रिया में महत्व दिए जाने की आवश्यकता तीव्र होती जा रही है। यह माना जाने लगा है कि किसी भी छात्र को शैक्षिक कार्यक्रम से सम्बन्ध करने का आधार उसके सीखने का तरीका होना चाहिए, अतः छात्र की विशिष्टता को जानकर उसके अनुरूप लचीली विधाओं को अपनाना होगा। शिक्षा के क्षेत्र में कई वर्षों से अध्यापन कार्य करते हुए शोधकर्ता को शिक्षण प्रक्रिया के निरन्तर अधोन्मुख स्वरूप तथा उसके दुष्प्रभाव की प्रत्यक्ष प्रतीति होती रही है। जब बालक किसी भी विषय का अध्ययन अपने तरीके से करता है तो उस विषय के प्रति रस एवं रूचि का विकास होता है, इस कारण बालक की उपलब्धि भी प्रभावित होती है। वर्तमान तथ्यों को देखते हुए शोधार्थी ने यह महसूस किया है कि टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की अधिगम शैली एवं दुश्चिन्ताओं का अध्ययन करना आवश्यक है अतः शोधार्थी ने उक्त विषय पर लघु शोध करने का निश्चय किया है।

1.2 समस्या कथन :–

समस्या की प्रस्तावना के आधार पर शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या का कथन इस प्रकार से किया है :–

'' टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का अध्ययन।''

1.3 शोध का औचित्य :–

अनुसंधान के लिए ली जाने वाली किसी भी समस्या का औचित्य परीक्षण अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि औचित्य ही समस्या की उपयोगिता सिद्ध करता है शोध का औचित्य इस प्रकार से है:–

1. टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की दृष्टि से :– यह शोधकार्य टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस शोध के माध्यम से यह जाना जा सकेगा कि टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाएँ किस प्रकार की दुश्चिन्ताओं से ग्रसित रहती है।

2. अभिभावकों की दृष्टि से :– यह लघु प्रयास अभिभावकों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस शोध के माध्यम से अभिभावक अपनी बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं को दूर कर सकेगे ।

3. अनुसंधान की दृष्टि से :– शोध से प्राप्त परिणामों के आधार पर आने वाला शोधार्थी नये चर लेकर इसी विषय पर अन्य अनुसंधान कार्य कर सकेगा।

1.4 पारिभाषिक शब्दावली :–

शोधार्थी द्वारा शोध में जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग करेगी उनका पारिभाषिकीकरण इस प्रकार से है:–

- टी.एस.पी. क्षेत्र :– जनजाति उपयोजना क्षेत्र में डूंगरपुर, बासवाड़ा एवं प्रतापगढ़ है। इसमें जनजाति विद्यार्थियों की बहुलता है।

– टी.एस.पी. गाईड लाईन के अनुसार

- दुश्चिन्ता :– ''दुश्चिन्ता वह मानसिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति आगत आपत्ति के कारण असुविधा अनुभव करता है।''

– हरलॉक

''दुश्चिता एक सांवेगिक भावना है जो भावी वास्तविक या काल्पनिक खतरे से संबंधित है जिसमें आशा, निराशा, का सम्मिश्रण है जिसमें व्यक्ति व्याकुलता भय, उद्वेग की परेशानियों से आकुल–व्याकुल रहता है। अतः यह आशक्ति खतरे के प्रति स्वयं की प्रतिक्रिया है।''

– मनोविज्ञान शब्द कोष

''दुश्चिन्ता को कई दृष्टियों से परिभाषित किया जा सकता है लेकिन हमारे वर्तमान प्रयोजन के लिए आशंका, असुविधा एवं आकुलता की सामान्यकृत अनुभूति के रूप में दुश्चिंता की सम्भवतः बढिया परिभाषा कही जा सकती है। भूमिगत स्त्रोत की तरह यह कही भी कभी भी प्रभावित हो सकती है।"

– सारेन्सन

शोध उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है :–

1. टी.एस.पी. क्षेत्र की बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का अध्ययन करना।

2. टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

शोधार्थी द्वारा शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया जो इस प्रकार से है :–

1. टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का परिसीमन :–

समय व धन एवं श्रम को ध्यान में रखते हुए ही अपने भावी शोधकार्य को निम्नलिखित सीमाओं तक सीमित रखा गया है :–

1. राजस्थान के डूँगरपुर जिले तक सीमित रखा गया है।

2. माध्यमिक स्तर की बालिकाओं को लिया गया है।

1.8 शोध विधि :–

शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया हैं।

1.9 उपकरण :–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधार्थी द्वारा दुश्चिन्ताओं हेतु ए.के. सिंह एव ए.एस. गुप्ता मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

1.10 न्यादर्श :–

न्यादर्श प्रविधि शोधकार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन, शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देता है तथा शोध परिणामों को अधिक शुद्ध एवं मितव्ययी बना देता है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा डूँगरपुर जिले के 3 राजकीय व 3 निजी विद्यालयों से 30 –30 बालिकाओं का चयन करते हुए कुल 180 बालिकाओं का चयन किया गया है। यह प्रत्येक वि शोध के लिए न्यादर्श का स्वरूप इस प्रकार से है:–

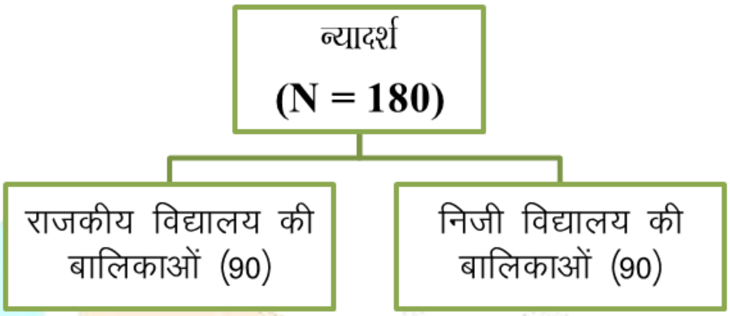

1.11 शोध प्रविधि :–

शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन के निष्कर्षों को प्रतिपादित करने हेतु निम्न प्रविधियों का उपयोग किया गया :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

दुश्चिन्ताओं का विश्लेषण

टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं के दुश्चिन्ताओं का विश्लेषण मेन्युअल में दी गई सारणीसंख्या–3 के अनुसार किया गया है जो इस प्रकार से है:–

क्र.सं.	श्रेणी	मानक प्राप्तांक की परास	प्रतिशत के आधार पर परास
1.	उच्चतम दुश्चिन्ता	42 या इससे अधिक	95 –100
2.	उच्च दुश्चिन्ता	34 से 41	75–94
3.	औसत दुश्चिन्ता़	18 से 33	60–74
4.	निम्न दुश्चिन्ता	10 से 17	21–59
5.	निम्नतम दुश्चिन्ता	9 या इससे कम	20 या इससे कम

सारणी संख्या 4.2.3

टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की दुश्चिन्ता का प्राप्तांकों के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	श्रेणी	बालिकाओं की संख्या	मानक प्राप्तांक की परास
1	उच्चतम दुश्चिन्ता	24	95 –100
2	उच्च दुश्चिन्ता	36	75–94
3	औसत दुश्चिन्ता़	90	60–74
4	निम्न दुश्चिन्ता	18	21–59
5	निम्नतम दुश्चिन्ता	12	20 या इससे कम
योग		180	

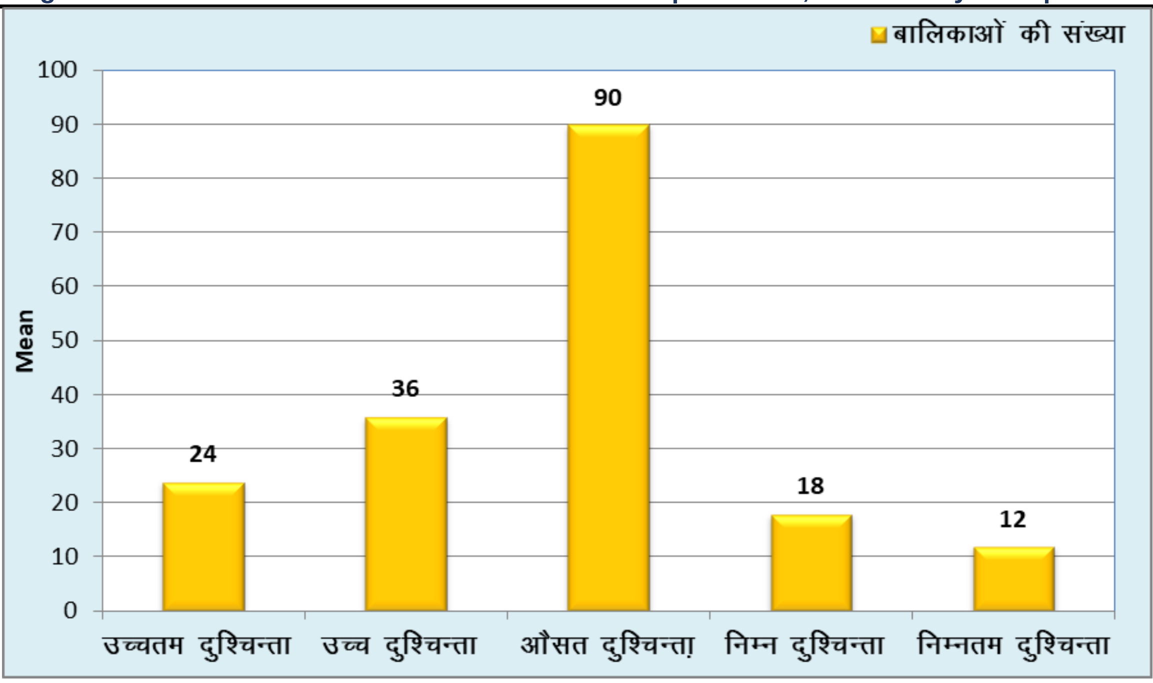

आरेख संख्या 4.2.3

टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की दुश्चिन्ता का प्राप्तांकों के आधार पर विश्लेषण

श्रेणीवार विश्लेषण :–

1. उच्चतम दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की दुश्चिन्ता का मापन करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की 24 बालिकाएँ द्वारा व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (95–100) के मध्य पाया गया, जो कि उच्चतम दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श बालिकाओं में से टी.एस.पी. क्षेत्र की 24 बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का स्तर उच्चतम पाया गया।

2. उच्च दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की दुश्चिन्ता का मापन करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की 36 बालिकाएँ द्वारा व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (75–94) के मध्य पाया गया, जो कि उच्च दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श बालिकाओं में से टी.एस.पी. क्षेत्र की 36 बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का स्तर उच्च पाया गया।

3. औसत दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की दुश्चिन्ता का मापन करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की 90 बालिकाएँ द्वारा व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (60–74) के मध्य पाया गया, जो कि औसत दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श बालिकाओं में से टी.एस.पी. क्षेत्र की 90 बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का स्तर औसत पाया गया।

4. निम्न दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की दुश्चिन्ता का मापन करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की 18बालिकाएँ द्वारा व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (21–59) के मध्य पाया गया, जो कि निम्न दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श बालिकाओं में से टी.एस.पी. क्षेत्र की 18 बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का स्तर निम्न पाया गया।

5. निम्नतम दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र की समग्र न्यादर्श बालिकाओं की दुश्चिन्ता का मापन करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर टी.एस.पी. क्षेत्र की 18बालिकाएँ द्वारा व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (20 या इससे कम) के मध्य पाया गया, जो कि निम्नतम दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श बालिकाओं में से टी.एस.पी. क्षेत्र की 12 बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का स्तर निम्न पाया गया।

सारणी संख्या 4.2.4

टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का प्राप्त प्राप्तांकों के आधार परम तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.सं.	बालिकाओं की संख्या		मानक प्राप्तांक की परास	स्तर
	राजकीय	निजी		
1	10	14	95 –100	उच्चतम
2	15	23	75–94	उच्च
3	55	36	60–74	औसत
4	08	10	21–59	निम्न
5	02	07	20 या इससे कम	निम्नतम
योग	90	90		

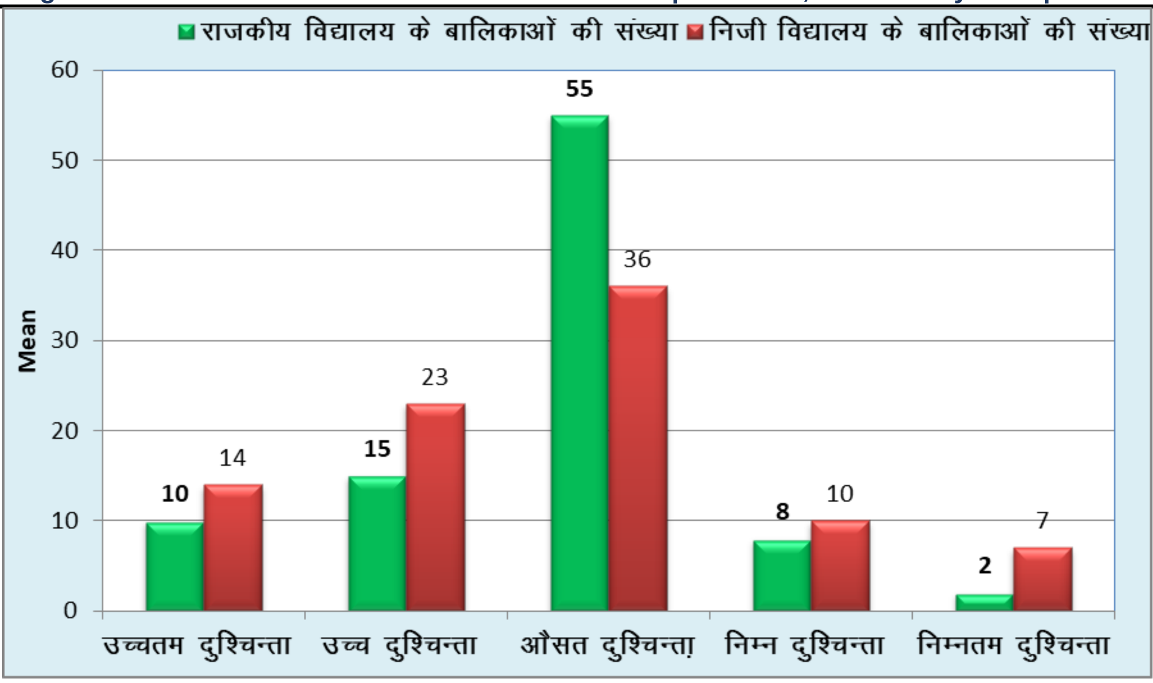

आरेख संख्या 4.2.4

टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ताओं का प्राप्त प्राप्तांकों के आधार परम तुलनात्मक विश्लेषण

श्रेणीवार विश्लेषण :–

1. उच्चतम दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ता की तुलना करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (95–100) के मध्य पाए गए है जो कि उच्चतम दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय विद्यालय में उच्चतम दुश्चिन्ताओं वाली बालिकाओं की संख्या निजी विद्यालय की अपेक्षा कम है।

2. उच्च दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ता की तुलना करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (75–94) के मध्य पाए गए है जो कि उच्च दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय विद्यालय में उच्च दुश्चिन्ताओं वाली बालिकाओं की संख्या निजी विद्यालय की अपेक्षा कम है।

3. औसत दुश्चिन्ता :– टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ता की तुलना करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (60–74) के मध्य पाए गए है जो कि औसत

दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में औसत दुश्चिन्ताओं वाली बालिकाओं की संख्या निजी विद्यालय की अपेक्षा अधिक है।

4. निम्न दुश्चिन्ता :— टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ता की तुलना करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (60—74) के मध्य पाए गए है जो कि निम्न दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में निम्न दुश्चिन्ताओं वाली बालिकाओं की संख्या निजी विद्यालय की अपेक्षा कम है।

5. निम्नतम दुश्चिन्ता :— टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की दुश्चिन्ता की तुलना करने हेतु शोधार्थी द्वारा डॉ. अनिल कुमार (भोपाल) द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता मापनी के कथनों पर व्यक्त राय के आधार पर प्राप्त प्राप्तांक परास (20 या इससे कम) के मध्य पाए गए है, जो कि निम्नतम दुश्चिन्ताओं को दर्शाता है। निष्कर्षतः टी.एस.पी. क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में निम्नतम दुश्चिन्ताओं वाली बालिकाओं की संख्या निजी विद्यालय की अपेक्षा कम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	Civil Jeanie	2003	Stress management London : Spire press.
2.	Cooper, L.L.	1983	Stress research issues for the 80's New York John Wiley.
3.	Castlema, M.C.	1992	How the experts cope with stress in.
4.	Christopher, Kanka	1999	Gajedra and Floret et at Adjustment stress and family life in adolescents in Canada, Brittan Hong Kong, Indian, Pakistan and Philippines. International Journal of Adolescents and youth,
5.	D.M. Pastonjee	1999	Studies in organizational role stress and coping Jaipur/Nere Delhi
6.	Deven Port, N.R.	1991	A comparative study of stress and coping skills among learning disabled and Regular Education Students (Doctoral Dissertation, state University of Gowa.

7.	Farber I.E. and Spence. K.W.	1956	Effect of Anxiety stress and task variables on reaction time, Journal of personality.
8.	Fourth Survey of research in Education	1983-88	Ed. Dr. M.B. Buch New Delhi NCERT
9.	Fulton, M.A.	1990	The Effects of two different relaxation. Treatments on stress anxiety (Doctoral Dissertation, Lehigh University, 1990
10.	Flirm and Mark	1999	Family Environment Stress and Health During Childhoo, Hormones, Health and Behavior (1999) 105, - 138
11.	Goldsten, M.J.	1973	Individual Differences in response to stress America Journal of Community Psychology 2 113-137
12.	Kaln at al	1964	Organizational Stress, studies in Role conflict and Ambiguity, New York
13.	Keeves J.P.	1973	International Encyclopedia of Education, International Review of education Stockholm.
14.	कपिल एच. के.	1981	अनुसंधान विधियाँ आगरा : हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन।
15.	शर्मा, आर. ए.	1984	शिक्षण अधिगम के नवीन परिवर्तन, मेरठ, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
16.	भटनागर, सुरेश	1995	शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान।
17.			
18.	सुखिया एवं मेहरोत्रा	1969	शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।
19.	ढोढियाल, एस. एन. एवं फाटक ए. बी.	1982	शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
20.	Carter, V Good C.V. Bar, A.S. Scates, D.E.	1973	Methodology of educational Research, New York.
21.	Rao Kiran Moudad Shanaz	2000	Appraisal of stress and coping Behavior in

and Subbarishna, D.K. college students

22. Buch M.B. A Second survey of Research in Education" Borada. Society for education Researcher and development.

23. Femnades C. and V. 1989 Murthy, A Study of Job Related stress and bumout in Middle and Secondary school teachers unpublished Manuscript.

Dictionary and Encyclopedias :

1. J.P. Chaplin. (1968) "Dictionary of Psychology"

2. "Compact edition of oxford English Dictionary"

3. "Oxford advanced Learner's Dictionary of current English" 1995. Edition edited by A.S. Horn.

4. Carter V. Good "Dictionary of Education" (1974) New York M.C. Gray, Hills Book.